● सुनो, समझो और पढ़ो :

५. (अ) असली गवाह

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने तेनालीराम की बुद्‌धिमानी एवं न्याय करने की क्षमता पर प्रकाश डाला है ।

बहुत पहले की बात है । एक दिन राजा कृष्णदेव राय दरबार में बैठे दरबारियों से किसी गंभीर विषय पर बातचीत कर रहे थे । तभी बाहर से किसी की आवाज सुनाई दी- ''दुहाई हो महाराज ! दुहाई ! मुझे न्याय दें । मेरा न्याय करें ।'' तीन लोग आपस में लड़ते-झगड़ते दरबार में पहुँचे । उनमें शहर का प्रसिद्‌ध हलवाई बालचंद्रन था और बाकी दो अजनबी थे ।

बालचंद्रन महाराज के पैरों पर गिरकर बोला, ''महाराज ! मुझे इन दो ठगों से बचाएँ । ये सिक्कों की मेरी थैली लूटना चाहते हैं । इन्होंने मुझे निर्दयता से पीटा भी है ।'' उन दोनों ने अपना बचाव करते हुए कहा ''महाराज ! ये हमारा धन हमें वापस नहीं कर रहा है । यह हमारी थैली है । इसने ये सिक्के हमसे लूटे हैं ।''

बालचंद्रन से पूछा गया तो वह हाथ जोड़कर बोला, ''महाराज ! दुकान बंद करते समय मैंने सारे सिक्के गिनकर थैली में रखें और चलने ही वाला था कि ये आ पहुँचे और मेरी थैली छीनने की कोशिश की ।''

''नहीं, ये झूठ बोल रहा है, थैली हमारी है । आप पैसे गिन लें । इसमें पूरे पाँच सौ सिक्के हैं'' अजनबियों ने कहा । महाराज यह तय नहीं कर पा रहे थे कि धन का असली मालिक कौन है ? गंभीर सोच-विचार के बाद उन्होंने तेनालीराम से कहा, ''समस्या का पता लगाओ, असली अपराधी को सजा मिलनी चाहिए ।''

तेनालीराम उन तीनों को कोने में ले गए और फिर से पूछताछ प्रारंभ की । उन्हें यही लगा कि बालचंद्रन नामी हलवाई है, वह ऐसी हरकत नहीं कर सकता पर उसकी बेगुनाही साबित भी तो करनी चाहिए थी । कोई गवाह भी मौजूद नहीं था ।

तभी उनके दिमाग की बत्ती जल उठी । उन्हें एक तरकीब सूझी । उन्होंने सिपाही को आदेश दिया- ''एक बड़े बरतन में उबलता पानी लाओ ।''

दरबार में सभी के चेहरों पर परेशानी थी । वे हैरान थे कि भला उबलते पानी का यहाँ क्या काम था ? उबलते पानी का बरतन एक चौकी पर रखा गया । तेनालीराम ने सारे सिक्के गर्म पानी में डाल दिए । कुछ ही देर में पानी पर घी तैरने लगा । हर कोई तेनालीराम के चेहरे पर मुसकान देख सकता था । तेनालीराम ने समझाया, ''महाराज, दूध का दूध, पानी का पानी हो गया । हमें इस कहानी की सच्चाई और गवाह दोनों का पता चल गया है । असली अपराधी पकड़े गए हैं । सिक्कों से भरी थैली इन अजनबियों की नहीं, बालचंद्रन की है ।'' ''तुम कैसे कह सकते हो ? क्या सबूत है ?'' महाराज ने पूछा । ''महाराज ! मिठाइयाँ बेचते समय अक्सर बालचंद्रन के हाथों पर घी लग जाता है । अब वही घी, गवाही देने के लिए पानी के ऊपर तैर आया है ।'' दोनों अजनबियों के चेहरे पीले पड़ गए । उन्होंने भागना चाहा पर सिपाहियों ने पकड़ा और जेल में डाल दिया । बालचंद्रन तेनालीराम को धन्यवाद दे खुशी-खुशी लौट गया । उसे सिक्कों की थैली वापिस मिल गई थी ।

महाराज ने भी तेनालीराम की चतुराई की प्रशंसा की और यथोचित पुरस्कार भी दिए ।

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ कहानी का वाचन करें । विद्यार्थियों से एकल, गुट में मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कहानी स्पष्ट करें । विद्यार्थियों को उनके शब्दों में यह कहानी एवं अन्य कहानी कहने के लिए प्रोत्साहित करें ।